बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 148 /2025) **Year: 8th**

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 16.02.2026**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ फ्रांसबीन पालक मूली मेथी गाजर शलजम चुकंदर लहसुन सब्जी मटर बैगन टमाटर मिर्च गोभी वर्गीय फसलों तथा आलू में आवश्यक मृदा नमी बनाए रखें। ➢ बैगनए टमाटर मिर्च व गोभी वर्गीय फसलों में नमी संरक्षण हेतु सुखी घास की पलवार प्रयोग करें। ➢ फसलों को संभावी महू के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ ग्रीष्म कालीन टमाटर बैगन एवं मिर्च के लिए पौधशाला तैयार कर लें। ➢ ग्रीष्म ऋतु हेतु चौलाई भिंडी लोबिया कुल्फा तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों की बुआई प्रारंभ करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य.प्रबंधन** ➢ इस समय बढ़ते तापमान के दृष्टिगत गेहूँ की फसल में समय समय पर पानी लगाना आवश्यक है! फसल की अवस्था एवं मृदा के अनुरूप एक निशिचित अन्तराल पर पानी लगाना लाभदायक होता है। ➢ दिन के बढते तापमान के कारण होने वाले नुक्सान से बचने के लिए गेहूँ की फसल में किसानो को पोटेशियम नाईट्रेट का १–२ प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए। ➢ समय से बोयी गयी सरसों की फसल अब परिपक्वता के करीब है ! इसकी समय पर कटाई सुनिश्चित की जानी चाहिए । ➢ खेत खाली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू कर दें! बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें। ➢ इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी०ए०पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए । बीजों की बोआई अगर सीडड्रिल से की जाए तो अच्छा रहता है।

		➢ इस तरह से खाद एवं बीज दोनों मिट्टी में एक साथ यथा स्थान दिया जा सकता ह।बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है। ➢ १ किग्रा बीज के लिए ४ ग्राम राईजोबियम कल्चर या ४–६ मिली तरल राईजोबियम को १० प्रतिशत गुड़ के घोल के साथ मिलाकर उपचारित करें! उपचार के बाद बीजों को ३० मिनट तक छाया में सुखाकर बोआई शुरू करें। **मृदा.प्रबंधन** ➢ जिन फसलों में बाली (जैसे गेहूँ) एवं फली(जैसे चना, मटर एवं मसूर) बन चुकी हो उसमें नत्रजन धारी उर्वरक जैसे यूरिया का प्रयोग कदापि न करें। ➢ फसलों में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण दिखने पर N:P:K(19:19:19)का छिडकाव 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से करें । ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्व प्रबन्धन करते रहे। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन0 पी0 के0 मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ सर्दी के मौसम में मुर्गीपालन करते समय निम्न सावधानियाँ मुर्गी पालकों को बरतनी चाहिए – ➢ सर्दी के मौसम में मुर्गीपालन करते समय विशेषकर चूजों को ठण्ड से बचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। उन्हें उनके शेड में कृत्रिम गर्मी प्रदान करने की व्यवस्था अंगीठी, कोयला, हीटर, पेट्रोलियम गैस इत्यादि माध्यम से करनी चाहिए। ➢ ब्रूडर का तापमान सामान्यतः 30 डिग्री सेल्सियस तक रखना चाहिए जिससे चूजे ठण्ड से बचे रहें। चूजों के ब्रूडर में आने से कम से कम 2–4 घंटे पहले ही ब्रूडर चालु कर देना चाहिए। ➢ जाड़े के मौसम में चूजों को ठण्ड लगने से सर्दी खांसी की बीमारी होने का डर रहता है, ऐसे मौसम में मुर्गियों को विटामिन मिनरल मिश्रण प्रदान करना चाहिए जिससे मुर्गियों में रोग प्रतिरोधक छमता बढ़ेगी व ठण्ड से लड़ने की शक्ति मिलेगी। ➢ सर्दियों के मौसम में मुर्गिओं के आरामदायक आवास की व्यवस्था भी अत्यंत आवश्यक है। जाड़े में कम से कम 6 इंच की अच्छी गुडवत्ता पूर्ण विछावन

		मुर्गी घर के अंदर विछावें, अच्छी विछावन मुर्गियों को फर्श की ठण्ड से बचाता है तथा तापमान भी नियंत्रित करता है।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ राई/सरसों में माँहू के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0. 15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600–700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें जिससे परभक्षी कीटों व मित्र कीटों का संरक्षण किया जा सके। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600–700 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्ब्डा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0. 15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतू फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0

		2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	तापमान बढ़ने तथा आर्द्रता में उतार–चढ़ाव के कारण रोगकारक सूक्ष्मजीवों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बन जाती हैं। इस समय फसलों में फफूंदी, जीवाणु एवं वायरस जनित रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है। किसानों को समय रहते इनका प्रबंधन करना आवश्यक है। **गेहूं** • पत्ती झुलसा : पत्तियों पर भूरे या काले धब्बे दिखाई देना इस रोग का संकेत है। **नियंत्रणः** 0.1ः कार्बेन्डाजिम या 0.25ः मैनकोजेब का छिड़काव करें। • पीला रतुआ : पत्तियों पर पीली धारियां बनती हैं जिससे फसल कमजोर हो जाती है। **नियंत्रणः** रोग लक्षण दिखने पर 0.1ः टेबुकोनाजोल या 0.25ः प्रोपिकोनाजोल का छिड़काव करें। **सरसों .•** सफेद रतुआ : पत्तियों और तनों पर सफेद धब्बे दिखाई देते हैं। **नियंत्रणः** 0.25ः मैनकोजेब का छिड़काव करें। • आल्टरनेरिया झुलसाः पत्तियों पर छोटे भूरे धब्बे बनते हैं तथा फूल और फलियों पर काले धब्बे बनते हैं। **नियंत्रणः** 0.25ः मैनकोजेब या क्लोरोथालोनिल का छिड़काव करें। • पाउडरी मिल्ड्यू : पत्तियों, तनों और बालियों पर सफेद चूर्ण जैसा फफूंद दिखाई देता है। **नियंत्रणः** सल्फर 2 ग्राम/लीटर पानी में छिड़काव करें याटेबुकोनाजोल 1 मिली/लीटर पानी में छिड़काव करें संक्रमण अधिक होने पर 10–15 दिन बाद पुनः छिड़काव करें। • तना गलन : तनों का काला होना और गलना इस रोग का संकेत है। **नियंत्रणः** जल निकासी सुनिश्चित करें तथा 0.1ः कार्बेन्डाजिम का छिड़काव करें। **चना :•** स्टेम रॉट : तनों पर भूरे या काले धब्बे बनते हैं। **नियंत्रणः** 0.25ः मैनकोजेब का छिड़काव करें। **सामान्य सुझाव** • फसलों की नियमित निगरानी करें और प्रारंभिक लक्षणों पर तुरंत कार्रवाई करें। • फसल अवशेष नष्ट करें या गहरी जुताई करें। • संतुलित उर्वरक का प्रयोग करें, अधिक नाइट्रोजन न दें। • फसल चक्र अपनाएं और एक ही फसल लगातार न उगाएं।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	फरवरी यानी माघ–फाल्गुन माह में भी वातावरण ठंडा होता है परन्तु जनवरी माह की तुलना में तापक्रम अधिक होता है। गर्मी का थोड़ा आभास होने लगता है। वायुगति बढ़ जाती है और सापेक्ष आद्रता बीते माह की अपेक्षा कम हो जाती है। माह के दूसरे पखवाड़े से मौसम सुहाना होने लगता है। औसतन अधिकतम एवं न्यूनतम तापक्रम क्रमशः 28.8 एवं 12.5 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है। फरवरी माह के दौरान उद्यान फसलों में संपन्न किये जाने वाले प्रमुख समसामयिक कृषि कार्यो का विवरण निम्नवत है – **आम में मुख्य कृषि कार्य**

		➢ इस समय आम के पेड़ पर फूल व फल आना शुरू हो जाता है। छोटे फलों को गिरने से रोकने के लिए 2,4–डी नामक दवा 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें। छिडकाव फल मटर के दाने के बराबर हो जाने पर करना चाहिए। ➢ आम मे चुर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम प्रति 1 लिटर के हिसाब से घुलनशील गंधक का छिडकाव करें । आम में यदि पुष्प कुरूपता दिखाई दे रही है तो गुच्छों को तुरंत काटकर नष्ट कर दें। ➢ श्यामव्रण (एन्थ्रेक्नोज) इस रोग की उग्रता की स्थिति में पत्तों एवं बढ़ते फलों पर इंडोफिल एम–45 नामक फफूंदनाशी (0.2:) का 2–3 छिड़काव करना चाहिए । रोग ग्रसित टहनियों तथा इसके प्रभाव से झड़े पत्तों को जलाना या गाड़ देना लाभकारी होता है । ➢ फफूंद जनित पिंक रोग के कारण पूर्ण विकसित पेड़ों की टहनियां एक दृ एक करके सूखने लगती है । इसके नियंत्रण के लिए सूखी टहनियों को 15 से.मी. नीचे से छांट कर उसके कटे भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगाना चाहिए तथा इसमें फफूंदनाशी का 2–3 छिड़काव करना चाहिए ➢ आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिए इमिड़ाक्लोप्रिड 1.0 मिली. प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। **पपीता में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पपीता में तना गलन रोग के कारण भूमि की सतह से तना सडना शुरू हो जाता है । पौधा गिर जाता है। ➢ इस रोग से बचाव के लिए पानी का निकास ठीक करें तथा कॅप्टान 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। **शरीफा (सीताफल) में मुख्य कृषि कार्य** ➢ शरीफा जिसे सीताफल भी कहा जाता है। सीताफल में स्केल कीट टहनियां व फूलों का रस चूसकर उसे हानि पहुंचाता है। ➢ इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ थाले में 10 से 25 सेंटीमीटर की गहराई पर मिलाएं। पेड़ पर डायमिथोएट 30 ई.सी. दवा 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें। **नींब में मुख्य कृषि कार्य** ➢ नींबू में सिट्रस कैंकर के कारण टहनियां, पत्तियां व फलों पर भूरे रंग के मध्य से फटे, खुरदरे व कॉर्कनुमा धब्बे बन जाते हैं। ➢ इसके नियंत्रण के लिए स्ट्रेप्टोसाइकिलन 100 मिलीग्राम व ताम्रयुक्त कवकनाशी दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करें। ➢ नींबू के पौधों के मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जाएं तब उन पर कलिकायन करें। ➢ वायरस को फैलाने वाले कीड़ों के नियंत्रण का समुचित प्रबंध करें । इसके लिए नये कल्ले निकलते समय इमिडाक्लोरप्रिड (3 मिलीध्10 ली. पानी) या डाइमेथोएट (15 मिली.ध्10 ली. पानी) का घोल बनाकर दो–दो छिड़काव एकान्तर विधि से करें । ➢ किन्नो,संतरा व नींबू आदि फल वृक्षों में फूल एवं फल लगना प्रारंभ हो जाता है। इन पौधों के थालों की गुड़ाई कर खाद–उर्वरक डालें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ वानिकी पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पष्चात पौधों की सिंचाई करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें।

		➢ चंदन के बीज जो नवंबर और दिसंबर के महीने में बोए गए थे, अंकुरित हो रहे हैं। 2–4 पत्ती अवस्था प्राप्त कर चुके पौधों को निकालकर पॉलिथीन बैग में प्राथमिक होस्ट के रूप में अरहर, मूंग जैसे प्राथमिक होस्ट के साथ रोपित किया जाना चाहिए, ताकि नर्सरी में उनका और विकास हो सके। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई, सिंचाई और टहनियों की छटाई करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	